Volume I, Issue V
April to June 2015

ISSN 2394 - 3807
E-ISSN 2394 - 3513
Impact Factor - 0.745

Divya Shodh Samiksha

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)



दिव्य शोध समीक्षा

Editor - Ashish Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email :** dssresearchjournal@gmail.com, **Website :** www.dssresearchjournal.com

(History / इतिहास)

44. भारत का गौरवशाली अतीत व विज्ञान (डॉ. नितिन सहारिया, डॉ. उमाशंकर पटले) 116
45. ग्वालियर राज्य में नारी पुनर्जागरण (डॉ. शुक्ला ओझा) 119
46. चारूकेश्वर स्थित सिद्धवट वृक्ष– बड़वाह (डॉ. मंगला ठाकुर) 121

(Geography / भूगोल)

47. Eco-Tourism Development In Madhya Pradesh Influence On Local Communities 123
(Dr. Mini Kochar)
48. नीमच नगर की जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव (डॉ. अख्तर बानो) 126

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

49. हिन्दू धर्म में तीर्थ यात्रा का महत्व (डॉ. जगमोहन सिंह पूषाम) 128
50. सूर्यबाला की कहानियों में निम्नवर्ग का यथार्थ चित्रण (प्रो. डी. पी. चन्द्रवंशी) 132
51. 21वीं सदी के उभरते परिदृष्य में हिन्दी पत्रकारिता एक अवलोकन (डॉ. अमित शुक्ल) 134
52. संत रविदास के दर्शन की प्रासंगिकता (डॉ. मधुमती नामदेव) 137
53. आदिवासी जीवन–समस्याएँ एवं समाधान हेतु प्रयास (डॉ. वन्दना अग्निहोत्री) 140
54. रीतिमुक्त काव्य में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग (डॉ. मंजुला जोशी) 142
55. 'भ्रमरगीत' एक विरह विभूषित काव्य कथा (डॉ. शाजिया खान) 145
56. संतोष खरे – व्यक्तित्व एवं व्यंग्य (डॉ. रमेश टण्डन) 148
57. भारतीय नारी पुनर्जागरण और मैथिलीशरण गुप्त (डॉ. सरोज जैन) 150
58. कविता का लोकतंत्र और जनकवि नागार्जुन (डॉ. रत्नेश विष्वक्सेन) 152
59. लोकतंत्र और संस्कृति (डॉ. प्रेमलता तिवारी) 154
60. नारी मन की कथाकार – मालती जोशी (डॉ. संध्या टिकेकर) 156
61. युगीन संदर्भों के कवि – ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी (डॉ. रंजना मिश्रा) 158

(English Literature / अंग्रेजी साहित्य)

62. Splintered Self : A comparative Study of Wife and Cry the Peacock 160
(Dr. Kranti Vats, Dr. Mani Mohan Mehta, Saurabh Mehta)
63. Symbols, Images and Metaphors of Painting in Auden's poetry (Sehba Jafri) 162
64. Impact Of William Shakespeare On Hindi Cinema (Dr. Mukta Sharma, Shweta Maheshwari) 164
65. A Critical Review On Ravinder Singh's Selected Novels- 'I Too Had A Love Story' 167
And 'Can Love Happen Twice?'And Its Youthful Literary Techniques (Apurva Upadhyay)
66. Concept Of Tradition Of T.S. Eliot (Dr. Supriya Paithankar) 169

समाजशास्त्र:- ..... (1) प्रो. डॉ. **आशुतोष व्यास**, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चित्तौड़गढ (राज.)
(2) प्रो. डॉ. **एच.एल. फुलवरे**, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार (म.प्र.)
(3) प्रो. डॉ. **इन्दिरा बर्मन**, शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)
(4) प्रो. डॉ. **उमा लवानिया**, शासकीय कन्या महाविद्यालय, बीना, जिला-सागर (म.प्र.)

हिन्दी:- ..... (1) प्रो. डॉ. **चन्दा तलेरा जैन**, अध्यक्ष अध्ययन मण्डल, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र)
(2) प्रो. डॉ. **जया प्रियदर्शनी शुक्ला**, वनस्थली विद्यापीठ (राज.)
(3) प्रो. डॉ. **कला जोशी**, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
(4) प्रो. डॉ. **रमेश टण्डन**, महात्मा गाँधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया, जिला - रायगढ (छ.ग.)

अंग्रेजी:- ..... (1) प्रो. डॉ. **प्रशांत मिश्रा**, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमच (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **अजय भार्गव**, शासकीय महाविद्यालय, बड़नगर (म.प्र.)
(3) प्रो. डॉ. **मंजरी अग्निहोत्री**, शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीहोर (म.प्र.)

संस्कृत:- ..... (1) प्रो. डॉ. **भावना श्रीवास्तव**, शासकीय स्वशासी महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **बालकृष्ण प्रजापति**, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंजबासौदा जिला विदिशा (म.प्र.)

इतिहास:- ..... (1) प्रो. डॉ. **नदीन गिडियन**, शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भूगोल:- ..... (1) प्रो. डॉ. **राजेन्द्र श्रीवास्तव** शासकीय महाविद्यालय, पिपलियामण्डी, जिला मंदसौर (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **अर्चना भार्गव**, शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

मनोविज्ञान:- ..... (1) प्रो. डॉ. **कामना वर्मा**, प्राचार्य, शासकीय राजमाता सिंधिया कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **सरोज कोठारी**, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

चित्रकला:- ..... (1) प्रो. डॉ. **अल्पना उपाध्याय**, शासकीय माधव कला-वाणिज्य-विधि महाविद्यालय उज्जैन (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **रेखा श्रीवास्तव**, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

संगीत:- ..... (1) प्रो. डॉ. **भावना ग्रोवर (कथक)**, सुभारती विश्व विद्यालय मेरठ (उ.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **श्रीपाद अरोणकर**, राजमाता सिन्धिया शासकीय कन्या महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

**** गृह विज्ञान संकाय ****

आहार एवं पोषण विज्ञान:- .... (1) प्रो.डॉ. **प्रगति देसाई**, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **मधु गोयल**, स्वामी केशवानन्द गृह विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
(3) प्रो. डॉ. **संध्या वर्मा**, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मानव विकास:- ..... (1) प्रो. डॉ. **मीनाक्षी माथुर**, अध्यक्ष, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
(2) प्रो. डॉ. **आभा तिवारी**, अध्यक्ष अध्ययन मण्डल रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

पारिवारिक संसाधन प्रबंध:- ... (1) प्रो. डॉ. **मंजु शर्मा**, माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोती तबेला, इंदौर (म.प्र.)
(2) प्रो. डॉ. **नम्रता अरोरा**, वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

**** शिक्षा संकाय ****

शिक्षा ..... (1) प्रो. डॉ. **मनोरमा माथुर**, प्राचार्य, अरावली शिक्षा महाविद्यालय, फरीदाबाद (हरियाणा)
(2) प्रो. डॉ. **एन.एम.जी. माथुर**, प्राचार्य एवं डीन पेसेफिक शिक्षा महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)
(3) प्रो. डॉ. **अर्चना श्रीवास्तव**, बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, देवास (म.प्र.)

**** शारीरिक शिक्षा संकाय ****

शारीरिक शिक्षा ..... (1) प्रो. डॉ. **अक्षयकुमार शुक्ला**, अध्यक्ष शारीरिक शिक्षा पेसेफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

**** ग्रन्थालय विज्ञान संकाय ****

ग्रन्थालय विज्ञान ..... (1) डॉ. **अनिल सिरोठिया**, शासकीय महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

DSS Divya Shodh Samiksha (An International Refereed Research Journal) April to June 2015
ISSN 2394-3807, E-ISSN 2394-3513, Imapct Factor - 0.745 (2014)

संतोष खरे - व्यक्तित्व एवं व्यंग्य

डॉ. रमेश टण्डन *

शोध सारांश–पन्द्रह दिन की अल्पावस्था में अनाथ होने के बाद कभी मामा के घर, तो कभी मौसी के घर घर - घर की ठोकरे खाई, कभी मार तो कभी डांट खाई। रिश्तेदारों के यहाँ रहते हुए आपकी माँ उनके घर के किसी कोने में बैठकर रोया करती थी। पारिवारिक एवं आर्थिक अभावों में जिंदगी गुजर करते हुए आपने एक ऐसा मुकाम बनाया कि 30 साल बाद, बड़े संस्थानों के प्रबंधक जो पहले आपको घास तक नहीं डालते थे, आपसे समय लेकर आपके आफिस में बैठकर आपकी प्रतीक्षा करते दिखाई पड़ते हैं। आपने अपने व्यंग्य निबंधों में प्रमुखत: मानवीय दुर्बलताओं, स्वेच्छाचारिता एवं साहित्यिक कमजोरियों को रेखांकित किया है। सरकारी तंत्र के दुष्परिणाम, चमचागिरी व समाज में व्याप्त आडम्बर आदि पर भी व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना –आपका जन्म 05 जून 1944 को छतरपुर (मध्यप्रदेश) में हुआ। आप अपने माता - पिता की इकलौती संतान हैं। जब आप पन्द्रह दिन के थे, तभी आपके पिता का देहान्त हो गया। आपका बचपन, भरण-पोषण, दीक्षा मामा के घर हुआ। आपकी प्राथमिक शिक्षा मामा जी के पुत्र के पास झांसी (उत्तरप्रदेश) में, हाई स्कूल की शिक्षा मामा जी के घर पर हमीरपुर एवं बांदा में हुई। आपने ग्यारहवीं एवं बारहवीं की परीक्षा प्राणीशास्त्र विषय लेकर मौसी के पुत्र के यहाँ उरई जिला - जालोन (उत्तरप्रदेश) और झांसी में रहकर उत्तीर्ण की। आप अधिकांश पुस्तकें मित्रों से उधार मांगकर पढ़े थे। आपके चाचा ने आपकी नियुक्ति एडहॉक, निम्न श्रेणी लिपिक के पद पर कलेक्ट्रेट सीधी में करवा दी। नौकरी के साथ - साथ आपने सीधी से बी. ए. और एल. एल. बी. किया। आप अंग्रेजी विषय लेकर एम. ए. किये।

जब आपने बी. ए. की परीक्षा दी, तो आपने विभागीय अनुमति नहीं ली थी। सीधी कलेक्टर के पास शिकायत गयी तो आपने जवाब में कहा कि मैं यह नौकरी केवल पढाई करने के लिए कर रहा हूँ। बाद में आपको अनुमति दे दी गई। जब आप निम्न श्रेणी लिपिक (एडहॉक) थे, तो शहडोल में स्थानांतरण हेतु आवेदन दिया था। आपका स्थानांतरण तो हो गया, पर इस बीच आपकी पदोन्नति उच्च श्रेणी लिपिक (एडहॉक) के पद पर हुई। जब कार्यमुक्त होने में समस्या आई, तो आपने सीधी कलेक्टर से, पदावनत करके पुन: निम्न श्रेणी लिपिक बनाये जाने का अनुरोध किया। सीधी कलेक्टर ने तुरंत स्टेनो बुलवाकर आदेश जारी किया। आप अंग्रेजी में एम. ए. करने के लिए ही शहडोल जाना चाहते थे, जो सीधी में संभव नहीं था।

एम. ए. होने के बाद आपने नौकरी छोड़ दी और सतना में वकालत प्रारम्भ की। वकालत के प्रारम्भ के दस वर्ष बहुत ही कठिनाई में गुजरा। पक्षकार या वरिष्ठ अधिवक्ता की ओर से दिन भर में 5 या 10 रूपये मिलते और आप खुश हो जाते। परन्तु इतनी छोटी रकम में आपके परिवार का भरण- पोषण संभव नहीं था। अर्थाभाव की स्थिति में पत्नी की ओर आशा भरी निगाहों से निहारते, पत्नी भी हमेशा सहयोग के लिए तत्पर रहती थी। जैसे ही उसे आकाशवाणी में लोक - गायन का चेक प्राप्त होता, नगदी कर लेती। इस प्रकार अभाव में जिंदगी चलती रही।

जब आप मामा - मौसी के घर परिवार में रहकर पढ़ाई कर रहे थे, तब के दिन आपके कष्ट के अतिक्रमण के दिन थे। कभी - कभी डांट-डपट के साथ पिटाई तक की नौबत आ जाती थी। ऐसे क्षणों में आपकी माँ घर के किसी कोने में बैठकर आँसू बहाने के सिवाय दूसरा काम नहीं करती थी।

प्रारम्भ के दो - तीन वर्ष आपने ट्यूशन करके काम चलाये, उसके बाद स्थानीय प्राइवेट विधि महाविद्यालय में तीन सौ रूपये प्रति महीने पर शिक्षक के रूप में कार्य किया। फिर वहीं प्राचार्य बने और 1000 रूपये मासिक वेतन के हकदार हुए। एक दिन उस पद को भी छोड़ दिया।

30 साल बाद, बड़े संस्थानों के प्रबंधक जो पहले आपको घास तक नहीं डालते थे, आपसे समय लेकर आपके आफिस में बैठकर आपकी प्रतीक्षा करते दिखाई पड़ते हैं।

आप 1976-77 में प्रगतिशील लेखक संघ सतना के अध्यक्ष बने, 2001 से पुन: उसी पद पर हैं एवं पाठक मंच सतना के संयोजक हैं। पता - 7, राजेन्द्र नगर, सतना।

व्यंग्य – आपकी रचनाएँ इस प्रकार हैं –

1. धूप का चश्मा,
2. सरकारी दफ्तर में कबीर, 1986
3. चमचे का विलाप, 1986
4. गाँव और शहर की लड़कियाँ, 1992
5. चेहरा और दर्पण, 2000

आपके व्यंग्य निबंध का प्रमुख विषय मानव प्रवृत्ति रहा है। मनुष्य हमेशा जवान बना रहना चाहता है। विभिन्न प्रकार के मेक-अप, प्लास्टिक सर्जरी के माध्यम से और काफी खर्च करके इंसान अपनी उम्र को छिपाने का भरसक प्रयास करता है। मानव की इसी प्रवृत्ति को लेखक ने इन शब्दों में उजागर किया है-

'काश। मनुष्य का चेहरा पशु - पक्षी की तरह समान बना रहता तो उसे कम से कम अपना बुढ़ापा न अखरता।' एवं 'विडम्बना यह है कि आदमी जिन बालों को कटवाने, साबुन, शैम्पू - तेल लगाने आदि पर भारी राशि का अपव्यय करता है वही बाल सफेद होकर आदमी की उम्र की चुगली करने लगते हैं।'[1] मनुष्य की प्रमुख दूसरी प्रवृत्ति यह रही है कि वह जैसा दिखता है, वैसा रहता नहीं है। 'मुँह में राम-राम बगल में छूरी' को चरितार्थ करते मानव की दोगली प्रवृत्ति पर आपने चोट की है। छल एवं प्रपंच से भरी दुनिया में आपका यह उद्धरण सटीक बैठता है-

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया, जिला - रायगढ़ (छ.ग.) भारत

'मैं तो इतना ही और कह सकता हूँ कि चेहरे के अंदर जो चेहरे छुपे रहते हैं यदि वही सामने दिखते तो दुनिया में छल और प्रपंच के अवसर बहुत कम हो जाते।'[12]

संवाद एवं कथोपकथन शैली के माध्यम से व्यंग्य निबंधों को आपने रोचक बनाया है। स्टेशन पर एक अफसर और साहित्य साधक के वार्तालाप का नमूना आपके निबंध में इस प्रकार दृष्टिगोचर होता है-

'सर ! ट्रेन तो आधा घंटा लेट है।'

'सर। काफी चलेगी ?'

'नहीं।'

'सर । आपने स्टेशन पर आकर साहित्य पर एहसान किया। आप पहले कलेक्टर हैं, जो साहित्य में दिलचस्पी ले रहे हैं।'

'नहीं, एहसान की कोई बात नहीं। वे (आने वाले) मेरे मित्र हैं, इसी से आया हूँ..... आप लोग साहित्यिक संगठन बनाइए, मैं मदद करूंगा।'

'सर, आप तो देवता हैं।'

'नहीं भाई।'[13]

साहित्य के क्षेत्र में घुसने या अपनी गहरी पैठ बनाने की प्रक्रिया पर चोट करने के लिए आपने मदारी - जमूरे संवाद शैली को अपनाया है। इस नाटकीय शैली के माध्यम से अपनी बात को पाठक तक आपने सफलतापूर्वक पहुँचाया है-

'जमूरे।'

'हाँ उस्ताद।'

'आ जाओ।'

'बता जमूरे, साहित्य में किस तरह घुसपैठ की जाती है।'

'झरोखे से, उस्ताद।'

'यह झरोखा क्या है, जमूरे।'

'हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, आई - अतीजावाद से अधिक जिस वाद ने प्रभावित किया है, वह है झरोखावाद। इस बात पर अभी तक किसी समीक्षक-आलोचक का ध्यान नहीं गया.....सिर्फ, उस्ताद का ध्यान गया है।'[14]

आपने मक्खन लगाना, पापड़ बेलना, छा जाना, कदम उठाना, भेजे में बात नहीं घूसना, कान में जूँ तक नहीं रेंगना, सन्यास ग्रहण करना आदि मुहावरों का अपने व्यंग्य निबंधों में स्थान दिया है।

निबंधों में व्यंग्य - निबंध लिखना कठिन काम है और व्यंग्य-निबंधों में आत्म - व्यंग्य निबंध लिखना और भी कठिन काम होता है। यह इसलिए कि व्यंग्य-निबंध लिखने से दूसरों से मार खाने का भय बना रहता है जो सहनीय है। पर आत्म व्यंग्य लिखने से स्वयं की कमजोरी व दुष्प्रवृत्ति के उजागर होने का खतरा बना रहता है, इससे बड़ी बदनामी हो सकती है एवं अपनों की नजर में गिरने का संशय बना रहता है। आपने यह दिलेरी दिखाई है जो निम्न पंक्तियों में स्पष्ट है -

'मुझे उत्तर न सूझता था और न सूझा। मैं बगलें झांकने लगा। उनके बगल में चूँकि उनकी धर्मपत्नी बैठी थी, इसलिए उन्हें मेरा बगलें झांकना भी खलने लगा। मैं अपराधी भाव से नाखून कुतरने लगा।'[15]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक - दो, पृ. 230 (चे-ह-रा -संतोष खरे)।
2. अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक - दो, पृ. 231 (चे-ह-रा -संतोष खरे)।
3. अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक - दो, पृ. 226-227 (मुख्य अतिथि, साहित्यकार और कलेक्टर -संतोष खरे)।
4. अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक - दो, पृ. 232 (साहित्य के झरोखे पर बैठा मदारी -संतोष खरे)।
5. चंदर, सुभाष (संपादक) : बीसवीं सदी की चर्चित व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 311 (क्रांति का मसीहा - संतोष खरे)।

****